कलीसिया अध्याय 43

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **प्रकाशितवाक्य 1-3**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (प्रकाशितवाक्य 1-3) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[यूहन्ना में प्रमुख पद]* **(16) यूहन्ना 16:8**

दो लोग साथ मिलकर ***पुनरावलोकन*** करें।

(16) यूहन्ना 16:8। वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) *[कलीसिया निर्माणकारी सेवकाई]* **बीमारी और चंगाई**

परिचय दें। यह शिक्षा बिमारी और चंगाई के विषय में है। हम उन बहुत से करणों को खोजेंगे कि क्यों लोग बीमार पड़ते हैं और चंगाई के विषय में बाइबल का विचार क्या है। हम चंगाईयों के अर्थ को ध्यान देंगे और विशेषकर चंगाई में विश्वास के स्थान को देखेंगे।

क. बीमारी और चंगाई का बाइबल आधारित दृष्टिकोण

1. सभी प्रकार की बीमारी की उत्पत्ति।

(1) बीमारी का वास्तविक कारण।

पढ़ें उत्पत्ति 3:1-19; रोमियों 5:12-19.

खोजें और चर्चा करें। आज संसार में सभी प्रकार की बीमारी और मृत्यु का वास्तविक कारण क्या है?

ध्यान दें। बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि सभी बीमरियां मनुष्य के पाप में पड़ने की वजह से हैं। *बीमारी* कुछ नहीं बल्कि भौतिक देह का कार्य न करना(बेकार होना) है, जिसमें मन, इच्छा और भावनाओं का कार्य न करना भी शामिल होता है। *मृत्यु* इस कार्य को न करने का चरम बिन्दु है।

उत्पत्ति 3 में हम पढ़ते हैं किस प्रकार मानव जाति शैतान के बहकावे में आकर पाप में पड़ गई।

- परमेश्वर ने मानव जाति को सर्प को शाप देकर और उसे मनुष्य का हमेशा का शत्रु बना कर दण्ड दिया।
- परमेश्वर ने स्त्री को उसके बच्चे को जनने की पीड़ा को बढ़ाकर और उसके पति को उस पर प्रभुता करने के द्वारा दण्ड दिया (उत्पत्ति 3:16), क्योंकि उसने अपने पति को पाप में धकेला था (1 तीमुथियुस 2:14)।
- परमेश्वर ने पुरुष को पृथ्वी को श्राप देकर और अपने जीवन भर उस पर मेहनत से खेती कर अपनी जीविका चलाने के द्वारा दण्ड दिया, क्योंकि उसने अपनी पत्नी की बात को सुना और माना था।
- अन्ततः परमेश्वर ने मानव जाति के पाप को शारीरिक मृत्यु के द्वारा दण्डित किया(रोमियों 5:12)।

सृष्टि की रचना के बाद मनुष्य के इस पाप में पड़ने से लेकर वर्तमान समय तक, सभी पुरुष स्त्रियां मृत्यु को प्राप्त होते हैं। उनकी देह मिट्टी में वापस लौट जाती हैं (उत्पत्ति 3:19)। शारीरिक मृत्यु पाप की वजह से भौतिक देह का अन्तिम रूप में कार्य न करना है। इसलिए इस संसार में बीमारी का सामान्य कारण मनुष्य का पाप में पडना है।

(2) बीमारी के विभिन्न कारण।

पढ़ें बाइबल के पद्यांशों को।

खोजें और चर्चा करें। संसार में बीमारियों के लगातार चलने वाले कारण क्या हैं?

ध्यान दें।

- कोई भी व्यक्ति संसार में बहुत सी संक्रमित बीमारियों में से किसी एक से (मरकुस 1:40) या वंशानुकृत बीमारी से या जन्म की किसी गड़बड़ी से (अय्यूब 14:4-6; यूहन्ना 9:1-3) जो *मनुष्य के पाप में पड़ने के कारण (रोमियों 5:12)* से होती है पीड़ित होगा।
- कोई भी व्यक्ति संसार में *व्यक्तिगत पाप* (मरकुस 2:5) की वजह से बीमार या खराबी से पीड़ित होगा।
- कोई भी व्यक्ति *दुष्टआत्मिक प्रभाव* (मरकुस 5:15; 9:17-18, 21-22) की वजह से बीमार या खराबी से पीड़ित होगा।
- कोई भी व्यक्ति *डॉक्टर या नीम हकीम* (मरकुस 5:26) *की बेपरवाही* की वजह से बीमार या खराबी से पीड़ित होगा।
- कोई भी व्यक्ति *अस्वस्थ जीवनशैली* (दानिय्येल 1:8,15-16) की वजह से बीमार या खराबी से पीड़ित होगा।

- कोई भी व्यक्ति *परमेश्वर के न्याय* (यहेजकेल 14:21) की वजह से बिमार या खराबी से पीड़ित होगा।

2. सभी चंगाई की उत्पत्ति।

खोजे और चर्चा करें। सभी अच्छी चीजे विशेषकर चंगाई कहा से आती हैं? बाइबल के पद्यांश को पढ़े।
ध्यान दें। बाइबल स्पष्ट रुप से सिखाती है कि सभी चंगाई दिव्य चंगाई होती है!

(1) सभी अच्छे वरदान परमेश्वर से आते हैं।

याकूब 1:17 सिखाता है कि ''क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है जिनमें न तो कोई परिर्वतन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है''। ''परमेश्वर ज्योति है उसमें कुछ भी अंधकार नहीं'' (1 यूहन्ना 1:5; याकूब 1:13)। उसने ज्योति और स्वर्गीय ज्योतियों को बनाया पर स्वयं हमेशा के लिए अरिवर्तनीय रहा!

मसीही लोगों को विशेष चीजों को, जैसे परमेश्वर के चमत्कार और चंगाई के वरदान को उसकी सामान्य और उपलब्ध कराने वाली आशीषों के बारे में थोड़ा या कम रुप में नहीं सोचना चाहिए। परमेश्वर के काम न केवल विशेष और धयान देने योग्य, अद्‌भुत और चमत्कारिक है, परन्तु प्रत्येक भली बात और सही वरदान परमेश्वर पिता जो स्वर्ग में है की ओर से आता है। *आकाश से वर्षा और फलवन्त श्रतु देकर तुम्हारे मन को भोजन और आनन्द से भरता रहा* सभी कुछ परमेश्वर की ओर से आता है (प्रेरितों के काम 14:17; यशायाह 28:23-28)। सभी कारीगरों के *काम का हुनर* परमेश्वर की ओर से आता है (निर्गमन 31:1-11)। सभी *आत्मिक आशीषें* परमेश्वर की ओर से आती हैं (इफिसियों 1:3)। *जीवन के लिए सभी अवसर* परमेश्वर की ओर से आते हैं (मत्ती 25:14-15)। ऐसा *कुछ भी नहीं है जो हमारे पास है* हमें परमेश्वर से प्राप्त न हुआ हो (1कुरि. 4:7)!

याकूब इस बात पर जोर देता है कि मसीही लोगों को जानबूझ कर जीवन के सभी अनुभवों को परमेश्वर पर जिस से वे आए है, अर्पित करना चाहिए (रोमियों 11:36)। मसीही लोगों को अच्छे समय में परमेश्वर की स्तूति करनी चाहिए द्ध1थुसलिनिकियों 5:17-18ऋ और कठिन समय में प्रार्थना करनी चाहिए (लूका 18:1; इफ़िसियों 6:18; याकूब 5:13)। जब मसीही ऐसा करते हैं तो वे इस बात को मानते है कि परमेश्वर का समर्थी हाथ सभी पर और पृथ्वी की सभी वस्तुओं पर है।

(2) सभी चंगाईयां दिव्य चंगाई हैं।

यिर्मयाह 17:14 में भविष्यद्वक्ता प्रार्थना करता है, ''हे यहोवा मुझे चंगा कर, तब मैं चंगा हो जाऊंगा; क्योंकि मैं तेरी ही स्तुति करता हूँ।'' वह यह महसूस करता है कि सभी चंगाई परमेश्वर की ओर से आती हैं। होशे 11:3 में परमेश्वर कहता है, ''मैं ही एप्रैम को पाँव-पाँव चलाता था, और उनको गोद में लिए फिरता था(परन्तु वे न जानते थे कि उनका चंगा करने वाला मैं हूँ।'' आज के समय की सभी शल्यचिकित्सा की

तकनीक और उपचार परमेश्वर की पृथ्वी के लोगों को उपलब्ध कराने वाली और देखभाल की अच्छाई का भाग है। इसलिए जब मसीही लोग परमेश्वर के पास जाते है, उनकी आँखें परमेश्वर पर होनी चाहिए। केवल परमेश्वर ही चंगा कर सकता है। जब दवाई असर करती है तो वह इसलिए होता है कि परमेश्वर ने उन्हें असर करने दिया है। जब शल्यचिकित्सक टूटी हुई पेशियों को ठीक करता और हड्डीयों को जोड़ता है, ऐसा इसलिए होता है कि परमेश्वर ने उन्हें जुड़ने दिया होता है। परमेश्वर ने मनुष्य शरीर को कुछ अद्भुत चंगाई की योग्याता के साथ रचा है।

कभी-कभी परमेश्वर फैसला करते हैं कि कोई चंगा नही होगा (यशायाह 38:1)। वह मरने की प्रक्रिया को लम्बा भी कर सकते हैं (यशायाह 38:2-6)। और वह चंगाई की प्रक्रिया को तेजी से भी कर सकते हैं उदाहरण के लिए, तुरंत चंगाई के द्वारा (2 शमूएल 5:14)। जिसको संसार ''प्राकृति चंगाई'' मानता है, बाइबल उसे ''दिव्य कार्य या सभी वस्तुओं का संभालना मानती है'' (इब्रानियों 1:3)। पृथ्वी पर की सभी चंगाई का अन्तिम आवलोकन दिव्य चंगाई है!

3. चंगाई की सामयिक प्रकृति।

खोजें और चर्चा करें। चंगाई कितनी सामयिक या स्थायी होती हैं।

ध्यान दें। बाइबल स्पष्ट रुप से बताती है कि मसीह के दूसरे आगमन से पहले सभी चंगाईयाँ *सामयिक चंगाईयाँ* हैं।

(1) मृत्यु से पहले केवल सामयिक चंगाई होती है।

पढ़ें यशायाह 53:4-5; रोमियों 6:23; इब्रानियों 9:27। यशायाह भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वाणी की ''यीशु मसीह ने निश्चय ही हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दु:खों को उठा लिया और उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो गये।'' यीशु केवल हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए नहीं, परन्तु हमारे रोगों को अन्तत्य: पूर्णरुप से चंगा करने के लिए मरे। इसलिए मसीही लोगों को चंगाई के लिए प्रार्थना करनी होगी और जब परमेश्वर की पक्की इच्छा होगी चंगा होने की उमीद करनी होगी।

तौभी, ''पाप की मजदूरी तो मृत्यु है''। क्योंकि सभी ने पाप किया है इसलिए सभी का अंत मृत्यु है। यहां तक कि पृथ्वी पाए जाने वाले सबसे तंदुरुस्त और स्वस्थ व्यक्ति भी मृत्यु को प्राप्त होते है। वे सभी, जिनको यीशु और प्रेरितों के द्वारा चंगाई मिली और यहां तक कि वे मृत्यु में से जिलाये भी गये अन्तत: मर गये। इसलिए, पृथ्वी की सभी चंगाईयाँ सामयिक चंगाईयाँ है! केवल यीशु मसीह ही प्रथम थे जो मृतकों में से फिर कभी न मरने के लिए जिलाये गये (1कुरि. 15:20)!

(2) दूसरे आगमन के बाद से हमेशा की चंगाई प्राप्त होगी।

पढ़ें प्रेरितों के काम 3:21; 1कुरि. 15:22-23; फिलिप्पियों 3:20-21; प्रकाशितवाक्य 21:3-5। ''सभी बातों की पुन: स्थापना'' केवल यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर होगी। हमारी कमजोर देह मसीह की महिमावान देह के समान केवल यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर परिवर्तित हो जाएगी। केवल तभी मसीही लोगों की देह फिर दुबारा से बीमार नही पड़ेगी या मृत्यु को प्राप्त होगी। केवल *तभी* परमेश्वर लोगों की आँखों के प्रत्येक आंसू को पोंछ डालेगा। केवल *तभी* वहां पर मृत्यु, दु:ख, रोना और र्दद नही होगा। केवल *तभी* पुराना

बीत जाएगा (इस पृथ्वी पर लोगों के रहने का समय) और परमेश्वर सभी बातों को नया कर देगा! अब तो मसीही लोग पृथ्वी पर शायद सामयिक चंगाई पाते हो, परन्तु केवल मसीह के दूसरे आगमन पर देह (जिसमें मन, इच्छा व भावनाएँ शामिल है) पूर्ण रुप से और हमेशा के लिए चंगी हो जाएगी!

4. चंगाई के रहस्य।

पढ़ें व्यवस्थाविवरण 29:29; लूका 22:42; इफिसियों 1:11; फिलिप्पियों 4:6-7; इब्रानियों 4:16।
सिखाएं।

(1) दो प्रकार की अबाइबलीय चंगाई।

चंगाई के बहुत से तरीके और नियम है, परन्तु उन में से कोई भी सर्वभौमिक नही है। कोई भी विशिष्ट तरीका या अनुभव सर्वभौमिक तरीके या अनुभव में रूप में नही बढ़ाया जा सकता। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित दो तरीके अबाइबलीय तरीके हैं:

- **वह विचार कि सभी प्रकार की बीमारी शैतानिक उत्पीड़न है।**

कुछ मसीही लोगों की धारणा यह है कि सभी प्रकार की बीमारी शैतान का उत्पीड़न होती है और वह दुष्ट आत्मा निकालने के द्वारा उसका इलाज करते हैं। सभी प्रकार की बीमारी की उत्पत्ति के लिए यह गलत विचार है। यह समझदार लोगों के मन में चंगाई की मसीही प्रार्थनाओं को उलझन में डाल देता है। बाइबल स्पष्ट रुप से सिखाती है कि केवल कुछ प्रकार की बीमारीयाँ ही दुष्टआत्मा ग्रसित होने की वजह से होती हैं।

- **यह विचार कि अवश्य ही चंगाई का दावा करना करना चाहिए।**

कुछ अन्य मसीही लोगों में यह चलन है कि वे आप की चंगाई का दावा करते है कि आप लोगों की प्रार्थना के प्रभाव से चंगे हो गये है जबकि आप जानते या महसूस करते है कि आप चंगे नही हुए हैं! ऐसे मसीहों से उम्मीद की जाती है कि वे इस प्रकार दर्शायें कि जैसे वे चंगे हो गये है। यह ''विश्वास'' का गलत विचार है। इस प्रकार का व्यवहार निष्ठाहीनता, संदेह और यहां तक कि परमेश्वर के प्रति विद्रोह को प्रोत्साहित करता है।

इस प्रकार के दो अबाइबलीय चंगाईयों के तरीके कलीसिया की चंगाई की सही सेवकाई को दुख: पहुँचाने और खण्डित करने वाली सेवकाई की ओर मोड़ देते हैं। वे लोग जो लगातार ऐसा कर रहे हैं, उन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह को मनुष्य की *व्यवस्था* में बदल दिया है। परन्तु परमेश्वर का अनुग्रह उसकी नाहक दया में बना रहता है और धार्मिक नियम में बदला नही जा सकता। चंगाई की इच्छा पिछले अवलोकन में परमेश्वर की सर्वोपरी इच्छा के भेद में बनी रहती है जो उसने हम पर प्रगट नहीं की, परन्तु फिर भी हमें प्रदान करता है।

(2) चंगाई के विषय में परमेश्वर की सर्वोपरी इच्छा प्रगट नहीं हुई है।

बाइबल स्पष्ट रुप से सिखाती है कि सभी चंगाई रहस्य हैं। यहां तक कि चंगाई का प्रकार भी परमेश्वर की सर्वोपरी इच्छा पर निर्भर करता है, जो उसने लागों पर प्रगट नही की है। परमेश्वर की सर्वोपरी इच्छा उसकी प्रगट इच्छा और गुप्त (रहस्य) इच्छा में निहित होती है (व्यवस्थाविवरण 29:29)। इसमें उसकी सक्रिय इच्छा साथ ही साथ उसकी दिव्य अनुमति शामिल होती है कि यह कुछ बातें होगी या नहीं होंगी। परमेश्वर के पास संप्रभुता के कारण है कि वह क्यों एक को *चंगा* करता है और अन्य को नहीं या क्यों वह एक को चंगाई की लम्बी प्रक्रिया से चंगा करता है और दूसरे को तुरन्त। इसलिए, मसीही लोग मनुष्य के रुप में जो उनकी उत्साहपूर्ण इच्छा है उसे परमेश्वर से मांग या आदेश नहीं दे सकते और दे सकेंगे। इसके स्थान पर परमेश्वर ने हमें प्रार्थना करना सिखाया, ''हमारी नहीं बल्कि तेरी इच्छा पूरी हो'' (लूका 22:42)! परमेश्वर की इच्छा ही हमेशा सबसे सही चीज है जो पूरी हो सकती है!

5. चंगाई के प्रति हमारी पहुँच।

खोजें और चर्चा करें। चंगाई के लिए प्रार्थना के प्रति मसीही लोगों की क्या पहुँच होनी चाहिए?

ध्यान दें। बाइबल स्पष्ट रुप से सिखाती है कि मसीही लोगों को जब वे किसी बात के लिए जिसमें चंगाई भी शामिल है प्रार्थना करें तो परमेश्वर के पास *आत्मविश्वास के साथ* आना चाहिए।

(1) केवल मधयस्थ मसीह के द्वारा ही चंगाई के लिए प्रार्थना करें।

पढ़े यशायाह 53:5; यूहन्ना 16:24। मसीही लोग केवल प्रभु यीशु मसीह की क्रूस पर मृत्यु से जो उसने हमारे पापों के प्रायश्चित के रूप में सही की वजह से चंगे होते है! इसलिए मसीही लोगों को ''मसीह के नाम में'' प्रार्थना करना सिखाया गया है। यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करने का मतलब उस एकता में जो यीशु मसीह ने स्वयं के और उद्धार के कार्य की पूर्णता के गुण में प्रार्थना करना है। परमेश्वर मसीही लोगों की प्रार्थना को केवल इसलिए सुनते हैं क्योंकि यीशु मसीह हमारी मधयस्थता के लिए के वहाँ मौजूद है।

(2) चंगाई के लिए आत्मविश्वास के साथ प्रार्थना करें।

पढ़े फिलिप्पियों 4:6-7; इब्रानियों 4:16। मसीही लोग अपने *सभी निवेदनों को* प्रार्थना में परमेश्वर के सम्मुख रख सकेंगे। और परमेश्वर उनकी प्रार्थना का उत्तर इस प्रकार देंगे कि परमेश्वर की शान्ति जो सारी समझ से परे है, उनके विचारों और भावनाओं को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी। मसीही लोगो को परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के निकट आत्मविश्वास के साथ आना चाहिए, जिससे उन्हें दया प्राप्त हो और उनकी आवश्यकता के समय पर अनुग्रह मिले। उसकी अनन्त बुद्धि, प्रेम, विश्वासयोग्यता और सामर्थ में परमेश्वर उस सही समय, स्थान और तरीके को जानता है जिसमें वह उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा।

इसलिए, यदि व्यक्ति प्रार्थना के बाद भी चंगा होता नही दिखता, तो मसीही लोगों को परेशान नहीं हो जाना चाहिए, यदि उन्होंने बाइबल का अनुसरण करते हुए जो कुछ भी वे कर सकते थे और बच्चे के समान परमेश्वर में विश्वास करते हुए प्रार्थना की है।

अपनी चंगाई की उत्साहित इच्छा को परमेश्वर को बताने के बाद (फिलिप्पियों 4:6), अभी भी अप्रगट इच्छा को (लूका 22:42), इस पूर्ण आत्मविश्वास के साथ कि उसने हमारी प्रार्थना को सुन लिया है (इब्रानियों 4:16; 1यूहन्ना 5:14) और यह कि अन्तिम आवलोकन में उसकी दिव्य प्रभुत्व इच्छा ही हमारी प्रार्थना का सर्वोतम उत्तर और संभवत: जो हमारे लिए हो सकती है सर्वोतम वस्तु है (रोमियों 8:28, 38-39) हमें अपनी मानवीय इच्छा को उसकी दिव्य संप्रभुता को सौप देना चाहिए!

जो भी उसका उत्तर हो: चंगाई या चंगाई नही, प्रार्थना से या लोगों से, तुरन्त या लम्बे समय बाद, जिन बातों के लिए हमने प्रार्थना की है उसके बारे में उसकी शान्ति हमारे विचार और ऐहसासों की बाढ़ को लाएगी (फिलिप्पियों 4:7)! फिर भी हमें उसके उत्तर को पूर्ण रुप से स्वीकार करने के योग्य होना होगा!

ख. क्यों कुछ लोग चंगे नहीं होते उसके कारण

परिचय दें। क्यों लोग चंगे नहीं होते उसके एक से अधिक ऐसा कारण हैं!
खोजें और चर्चा करें। ऐसे कौन से कारण है कि कुछ लोग चंगे नहीं होते?

1. व्यक्तिगत पाप।

पढ़ें उत्पत्ति 12:17; 20:17; भजन संहिता 32:1-5; 66:18; यूहन्ना 5:14।
व्यक्तिगत पाप भी कारण हो सकता है कि लोग चंगे नही होते। उदाहरण के लिए, यूहन्न 5:14 में, यीशु उस व्यक्ति से जो 38 वर्ष से बीमार था कहते हैं, ''अब पाप न करना, ऐसा न हो कि इससे कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।'' कभी-कभी व्यक्ति चंगा नही होता, क्योंकि परमेश्वर उसको किसी पाप के लिए जो वह छोड़ना नही चाहता दंड दे रहे होते हैं। एक बुरी आदत (उदाहरणार्थ: धूम्रपाप) भी रोग का कारण हो सकती है। इसलिए, परमेश्वर बीमारी को दंड या किसी विशिष्ट पाप के लिए चेतावनी के रुप में अनुमति दे रहे होते हैं।

2. अस्वस्थ जीवन-शैली।

पढ़ें मत्ती 6:27; 1 पतरस 4:3
स्वस्थ और संतुलित रुप में जीने को अनदेखा करना भी एक कारण हो सकता है कि कुछ लोग चंगे नहीं होते। कुछ लोग अपनी देह की परवाह नहीं करते। उन्हें बहुत सिर दर्द होता है क्योंकि वे बहुत चिन्ता करते हैं। या उन्हें उच्चरक्तचाप (या खराब होना) होता है, क्योंकि वे अपने टूटने के बिन्दू तक काम करते हैं। या उन्हें पेट की समस्या होती है, क्योंकि वे असंतुलित या तो बहुत ज्यादा या कम आहार लेते हैं। दानिय्येल भविष्यद्वक्ता ने राजा का भोजन खाने के बदले, केवल शाहार एवं जल खाना ही स्वीकार किया। परिणाम

स्वरुप वे और उसके मित्र राजा के सभी सेवकों से ज्यादा स्वस्थ थे (दानिय्येल 1:12-16)। ज्यादातर लोगों को चंगाई पाने से पहले अपनी जीवन-शैली को बदलना होता है।

3. गलत संबन्ध।

पढ़े इब्रानियों 12:15।

परिवार को बदलना अनदेखा करना या सामाजिक तौर तरीके ऐसे कारण होते हैं कि लोग चंगे नहीं होते। जब तक घृणा और गलत संबन्धों को जारी रखा जाता है चंगाई बहुत बार आगे सरक जाती है। परिवार, कलीसिया और समाज (कड़वाहट, क्षमा करने की अनिच्छा) में गलत संबन्ध, को चंगाई के होने पहले बदलने की जरुरत है। संबन्धों में चंगाई (अन्तरिक चंगाई) हमेशा भौतिक चंगाई को ले कर आती है!

4. मूल समस्याओं को न सुधाारना.

पढ़ें कुलुसियों 1:24; 1पतरस 4:3।

अपनी समस्याओं का न समझना भी वह करण हो सकता है जिसकी वजह से लोग चंगे नहीं होते। मानव बहुत ही उलझा हुआ व्यक्ति होता है। बहुत बार समस्या के गहरे छुपे हुए करण होते है, जिनके बारे में बीमार व्यक्ति शायद जानते भी नहीं। व्यक्ति की अज्ञानता में इस मूल समस्या को व्यक्ति के विवेकपूर्ण प्रकाश में लाना चाहिए इससे पहले कि व्यक्ति परमेश्वर से उसको ठीक करने के लिए कहे। बहुत बार जब लोग *समस्या के लक्षणों* के लिए प्रार्थना करते हैं, तब आरंभिक उन्नति होती है, परन्तु बाद में वह व्यक्ति फिर से अपनी पुरानी बीमारी की ओर लुढ़क जाता है क्योंकि *समस्या के मूल कारण* को दूर नहीं किया गया था। मसीही मनोवैज्ञानिक और मनोचिकित्सक समस्या को उजागर करने में सहायक हो सकते हैं। (देखें ''समस्याओं का विचार'' मैनुएल 8, अध्याय 39, अंक डी)।

5. रोग की गलत पहचान।

रोग की गलत पहचान भी कभी-कभी ऐसा कारण होता है कि कुछ लोग चंगे नही हो पाते। मसीही लोग तीन रूपों में रोग की गलत पहचान करते हैं:

- जब मसीही लोग सोचते हैं कि आन्तरिक चंगाई या दुष्ट आत्मा से छुटकारा आवश्यक है, जबकि वास्तविकता में भौतिक चंगाई मूल आवश्यकता होती है।
- जब मसीही लोग दुष्ट आत्मा से छुटकारे के लिए प्रार्थना करते हैं या व्यक्ति को भौतिक चंगाई के द्वारा सही करते हैं, जबकि वास्तविकता में आन्तरिक चंगाई मूल आवश्यकता होती है।
- जब मसीही लोग सोचते हैं कि भौतिक चंगाई या आन्तरिक चंगाई ही समस्या है, जबकि वास्तविकता में दुष्ट आत्मा से छुटकारा ही मूल आवश्यकता होती है।

6. विश्वास की कमी।

पढ़ें मत्ती 17:14-20।

विश्वास की कमी भी एक कारण हो सकता है जिसकी वजह से लोग चंगे नहीं होते। एक बार जब चेले एक लड़के को चंगा करने में असमर्थ थे कौन ज्यादा पीड़ित था जब वह कब्जे में था, यीशु ने कहा कि चेले इस लिए उसे चंगा नहीं कर सके क्योंकि उसना विश्वास थोड़ा था। यीशु के समय में, चंगाई को लेकर सामान्य *अविश्वास* था। आज भी ऐसा ही है। लोग प्रश्न करते हैं क्या परमेश्वर चंगा कर सकते हैं। या सोच के निम्नतम् स्तर पर चले जाते कि परमेश्वर क्यों चंगा नहीं करते जबकि उस कारण विचार करें कि क्यों परमेश्वर चंगा करना चाहेंगे!

7. चिकित्सकों की दवाईयों के विरुद्ध संदेहवाद।

चिकित्सकों या दवाओं की सहायता लेने को अस्वीकार कर देने की वजह से भी कुछ लोग चंगे नही हो पाते। चिकित्सक और दवाएं चंगाई को लाने के लिए परमेश्वर के सामान्य यंत्र है। वैसे तो, हमें अवश्य ही नीम-हकीम, तांत्रिकों, दवाविक्रेता, उनके जादू के कार्य, गलत दवाएं, मिश्रित औषधिा और आकर्षण आदि को तिरस्कार कर देना चाहिए।

8. असंयमी।

असंयमी होना भी ऐसा कारण होता है कि कुछ लोग चंगे नहीं हो पाते। परमेश्वर हमेशा एकदम से ही चंगाई नहीं दे देते। कभी-कभी चंगाई तुरन्त होती है परन्तु कभी-कभी चंगाई बहुत लम्बे समय बाद या लम्बी प्रक्रिया के बाद प्राप्त होती है।

9. यीशु मसीह और उसके राज्य के वास्ते पीड़ित होना।

यीशु मसीह और उसके राज्य के वास्ते पीड़ित होने की वजह से कुछ लोग चंगे नहीं होते। कभी-कभी परमेश्वर कुछ मसीही लोगों को मसीही सताव से शामिल होने के लिए बुलाते हैं! कुलुस्सियों 1:24, में पौलुस कहता है, ''मसीह के क्लेशों की घटी उस की देह के लिये, अर्थात् कलीसिया के लिए अपने शरीर में पूरी किए देता हूं।'' 1पतरस 4:13 कहता है, ''जैसे जैसे मसीह के दु:खों में सहभागी होते हो, आनन्द करो, जिस से उसकी महिमा के प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित और मगन रहो।'' यह पीड़ा या दुख: सामाजिक सताव थे (प्रेरितों के काम 13:50; 14:5,6,19; 2कुरि. 11:23-28), भौतिक रोग या कमी (यूहन्ना 9:1-3; 2कुरि. 12:7-10; गलातियों 4:13-14) या आत्मिक सताव (लूका 15:11-24; 1कुरि. 5:1-2; 2तीमुथियुस 4:10)। अत: बाइबल सिखाती है कि कुछ परिस्थितियों में देह या आत्मा में पीड़ा नजरअंदाज न किये जा सकने योग्य है और इस प्रकार की पीड़ा मसीही अनुभव का एक भाग है। परमेश्वर कुछ लोगों को अपने राज्य के वास्ते, सुसमाचार के प्रचार हेतु या गरीबों और दबे हुए लोगा की सहायता करने के लिए देह या आत्मा में पीड़ित होने के लिए बुलाते है।

10. परमेश्वर का सर्वोच्च प्रभुत्व उद्देश्य।

पढ़ें। यूहन्ना 9:3; यूहन्ना 11:4; 2कुरि. 12:7-10।

यीशु ने कहा, ''ऐसा इसलिए हुआ की परमेश्वर का काम इसके जीवन में दिखाई दे''। और, ''यह बीमारी परमेश्वर की महिमा के लिए है, जिससे इसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की भी महिमा हो।''

यह तथ्य कि परमेश्वर के पास कुछ लोगों के जीवन के लिए सर्वोच्च प्रभुत्व उद्देश्य हैं यही वह कारण है जिसकी वजह से कुछ लोग चंगे नहीं होते। पौलुस ने परमेश्वर से तीन बार ''उसकी देह के कांटे को निकालने के लिए'' प्रार्थना करी। बाइबल यह नहीं बताती कि उसकी देह का यह कांटा क्या था, परन्तु वह यह बताती है कि यह बीमारी या वह कठिनाई थी जो पौलुस को झुलसाती थी। उसने इसे ''शैतान का दूत जो मुझे घूंसे मारता है'' कह कर पुकारा। यह इतनी गंभीर थी कि लोग उस से घृणा या घिन कर सकते थे (गलातियों 4:13-14)।

बाइबल वह कारण बताती है कि क्यों परमेश्वर ने पौलुस को चंगा नहीं किया। परमेश्वर ने पौलुस को चंगा नहीं किया, क्योंकि वह पौलुस की दुर्बलता में अपनी सामर्थ को प्रगट करना चाहता था! परमेश्वर ने पौलुस से कहा, ''मेरा अनुग्रह ही तेरे लिए काफी है, क्योंकि मेरी सामर्थ दुर्बलता में प्रगट होती है।'' और पौलुस ने परमेश्वर के पवित्र कारण को स्वीकार कर लिया। उसने कहा, ''इसलिए, मसीह के वास्ते, मैं दुर्बलताओं, अपमान, कठोरता, सताव, कठिनाईयों में आनन्द करता हूँ। क्योंकि जब मैं दुर्बल होता हूँ, तभी मैं बलवान होता हूँ।''

ग. बिमारी के लिए मसीही लोगों का प्रतिउत्तर

1. बीमारी को स्वीकार करें और अपने दर्द और भावनाओं को व्यक्त करें।

पढ़ें यूहन्ना 11:35; मत्ती 27:46।

ध्यान रखें और चर्चा करें। किस प्रकार मसीही लोग उन सभी प्रकार की भावनाओं का सामना करते हैं जब वे बीमार होते हैं?

ध्यान दें। ज्यादातर बीमारी वास्तविक पीड़ा और कष्ट के साथ आती है। क्या मसीही व्यक्ति को इंकार या मान लेना चाहिए कि वह बीमार और पीड़ित है? इंकार और भी भयावह समस्या का कारण हो सकता है। इस लिए बीमारी और पीड़ा को स्वीकार कर लेना अच्छा होता है।

बहुत बार बीमारी सभी प्रकार की भावनाओं का कारण बन जाती है। क्या मसीही व्यक्ति को हमेशा आनन्दित रहना चाहिए, या दुखी महसूस करने और कुड़कुड़ाने की जगह भी है? यीशु ने अपनी भावनाओं को व्यक्त किया - वह रोया।

क्या मसीही व्यक्ति को कभी भी अपनी बीमारी के कारण के लिए प्रश्न नहीं करना चाहिए, या वह अपनी नाराजगी को व्यक्त करें और पूछे, ''क्यों परमेश्वर कुछ करते नहीं? क्रूस पर, यीशु ने एक बार पुकारा, ''मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यो छोड़ दिया?''

बहुत सी बीमारीयाँ मृत्यु के साथ समाप्त हो सकती है। किस प्रकार एक मसीही व्यक्ति, जो गंभीर रुप से बीमार है, मृत्यु के दु:ख का सामना कर सकता है? क्या मसीही व्यक्ति को मृत्यु के चेहरे में मसीह आशा के बारे में और अधिक सिखाना नहीं चाहिए?

2. अपने स्वयं के जीवन को जांचे और पाप को स्वीकार करें।

पढ़ें याकूब 5:13–15।

ध्यान दें और चर्चा करें। याकूब के अनुसार, किस प्रकार एक मसीही व्यक्ति को अपनी बीमारी के लिए प्रतिउत्तर देना चाहिए?

ध्यान दें। *सहायता के लिए पुकारें।* मसीही लोगों को कलीसिया के प्राचीनों को बुलाना चाहिए। याकूब के बारें में व्याख्यां है कि वह बहुत बीमार, थका हुआ और जीर्ण व्यक्ति नजर आता था। परमेश्वर से स्वयं के लिए प्रार्थना करने के बजाय, बीमार व्यक्ति को प्राचीनों को उस पर प्रार्थना करने के लिए बुलाना चाहिए।

पाप स्वीकार करें। पद्यांश कहता है कि बीमार व्यक्ति की ओर से *कोई पाप या अज्ञानता हो सकती है,* जो परमेश्वर उसके ध्यान में लाना चाहता है। यदि ऐसा है, तो बीमार व्यक्ति को अपनी बीमारी का प्रयोग स्वयं को जांचने के लिए और शान्तिपूर्वक परमेश्वर से पापों की क्षमा मांगने के लिए करना चाहिए। परमेश्वर उसे क्षमा करेंगे(1 यूहन्ना 1:9)! याकूब 5:16 यह नही सिखाता कि लोगों के समाने जिनका उन से कोई मतलब नहीं अपने पाप स्वीकार करें, परन्तु अपने पाप उसके सामने स्वीकार करें जिसके विरुद्ध वे किये गए हैं।

जीवन का पुनर्विलोकन। व्यक्ति की बीमारी का उद्देश्य संभवत: किसी विशेष पाप की वजह से नहीं होगा, परन्तु केवल बीमार व्यक्ति को *अपने जीवन और उसके उद्देश्यों को पुनर्विलोकित करने, और स्वयं को पुन: परमेश्वर के सम्मुख समर्पित करने का अवसर उपलब्ध कराने के लिए होगा।* बीमार व्यक्ति को यह महसूस करना चाहिए कि चंगाई में उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व, संबन्धा (परमेश्वर, परिवार के लोग और उसके पड़ोसियों के साथ) और उसके लक्ष्य, गतिविधियाँ और प्राथमिकताएं शामिल होती हैं। इस रूप में उसकी बीमारी का उद्देश्य उसको महान आत्मिक परिपक्वता की ओर ले जाना होता है।

घ. विभिन्न प्रकार की चंगाईयाँ

खोजें और चर्चा करें। किन विभिन्न प्रकार की चंगाईयों के बारे मे बाइबल सिखाती है? बाइबल के पद्यांश को पढ़ें।

ध्यान दें। सामान्य तौर पर, मसीही लोग बाइबल में से पाँच विभिन्न प्रकार की चंगाईयों को अलग कर सकते हैं।

1. पाप और उसके कारण से टुटापन होने से चंगाई.

पढ़ें होशे 14:4; याकूब 5:16।

पाप से चंगाई पाप से मनफिराव के द्वारा होती है। होशे 14:4 में, परमेश्वर कहता है, ''मैं उनके भटक जाने की आदत को दूर करुंगा''। याकूब 5:16 सिखाता है, ''इसलिए तूम आपस में एक दूसरे के सामने अपने-अपने पापों को मान लो और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिस से चंगे हो जाओ''।

(1) बाइबल में पाप स्वीकारण।

पाप स्वीकारण को लेकर बाइबल का पक्ष निम्नलिखित है।

- परमेश्वर के सम्मुख *गुप्त पाप स्वीकारण,* क्योंकि ऐसे गुप्त पाप भी होते है जो केवल परमेश्वर के विरुद्ध ही किये गये होते हैं (भजन संहिता 90:8)।
- *व्यक्तिगत पाप स्वीकारण,* क्योंकि हमारे कुछ पाप परमेश्वर और साथ ही साथ एक या अधिक लोगों के विरुद्ध किए गये होते हैं, और यह पाप जिसके विरुद्ध किए गये होते हैं उसी के समाने स्वीकारें जाते हैं (मत्ती 5:23-24; 18:15)।
- *लोगों के सामने स्वीकारण,* क्योंकि कुछ पाप समूह, समाज या सम्पूर्ण कलीसिया के विरुद्ध किये जाते है और अवश्य ही लोगों के सामने स्वीकारें जाते है (1तीमुथियुस 5:20)।

(2) अन्य विश्वासियों की उपस्थिति में पाप का स्वीकारण।

कुछ मसीही लोग यह सोचते है कि याकूब 5:16 सिखाता है कि एक मसीही व्यक्ति को, जो पाप के बोझ तले दबा हुआ है, अपने मित्रों को खोजना चाहिए और अपने मित्र को अपनी समस्या बतानी चाहिए, जिससे प्रार्थना में वे एक दूसरे के बोझों को उठा लें और छुटाकरे, शुद्धता और चंगाई के स्थान के द्वारा प्रार्थना करें। परन्तु याकूब 5:16 की शब्दावली इस व्याख्यां की अनुमति नही देती! बाइबल में, क्रिया का अर्थ अपने गुप्त पापों को अपने मित्र को ''दुख: से साथ स्वीकार करना'' या ''गुप्त रुप से बताना'' नही है, परन्तु सही में ''वही समान बात कहना जो परमेश्वर कहता है''। रोमियों 10:9-10 में इस का अर्थ ''अपने मुंह से वह कहना जो अपने हृदय में विश्वास करते हैं।'' लूका 17:3-4 और याकूब 5:16 में इसका अर्थ ''वही समान बात कहना जो परमेश्वर पाप के विषय में कहता है'', परन्तु केवल उसी व्यक्ति को जिसके विरुद्ध पाप हुआ है।

बाइबल के इस पद्यांश का मतलब यह नही है कि एक समूह को एकत्र करें या एक सभा करें जिसमें विश्वासी एक दूसरे को अपने पापों के विषय में बताएं। याकूब 5:16 के आधार पर इस प्रकार की गतिविधियां न्याय संगत नहीं हो सकती, क्योंकि यह इतना भी नहीं कहता, ''अपने पापों को एक दूसरे की उपस्थिति में परमेश्वर के सम्मुख स्वीकार करें'', परन्तु ''अपने पापों को एक दूसरे के सामने स्वीकार करें'', यह कि उसके सामने जिसे विरुद्ध अपराध किया हो। समूह में अपने पापों को मान लेना केवल बकवास और बुराई की बातों को बढ़ायेगा। (देखें मैनुएल 2, सप्लीमेंट 10)।

(3) जिसके विरुद्ध आपने पाप किया हो उसके सम्मुख पाप स्वीकारण।

याकूब 5:16 की एकदम सही समझ यह है कि आप केवल उसी व्यक्ति के आगे पाप स्वीकारें जिसके विरुद्ध पाप किया हो और उसी से क्षमा प्राप्त करें। विश्वासियों को आपस में एकसाथ मिल कर परस्पर

अपने गुप्त पापों को स्वीकार और घृणा नहीं करना है, बल्कि इससे बढ़कर अपनी भाषा में परमेश्वर के आश्चर्यकार्मो का वर्णन करना है (प्रेरितों के काम 2:11)।
यदि लागू हो, तो बीमार व्यक्ति अपने पापों को पहले परमेश्वर के समक्ष स्वीकार करें और बाद में, जब उसके पास मौका हो, तो उस व्यक्ति से भी जिसके विरुद्ध उसने पाप किया है।

2. आन्तरिक टूटेपन से चंगाई।

पढ़ें भजन संहिता 147:3; नीतिवचन 12:18; 15:30।
आन्तरिक भावनात्मक समस्याओं से चंगाई मूल समस्या के एहसास के द्वारा प्राप्त होती है और तब परमेश्वर को उस का निवारण करने की अनुमति दें। भजन संहिता 147:3 कहता है, ''परमेश्वर टूटे हृदय को चंगा करता है।''

3. भौतिक बीमारी से चंगाई।

पढ़ें मत्ती 4:23; फिलिप्पियों 3:20-21।
उद्धार के इतिहास के संदर्भ में, यीशु ने बहुत से बीमार लोगों को चंगा किया। मत्ती 4:23 कहता है, ''और यीशु गलील में फिरता हुआ.... और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।'' परन्तु मत्ती 13:58 कहता है, ''और उसने वहां उनके अविश्वास के कारण बहुत से सामर्थ के काम नहीं किए।''
देह की मृत्य के बाद. केवल जब अपनी मृत्य के बाद हम यीशु को देखेंगे, तभी हमारी आत्मा की पूर्ण और हमेशा की चंगाई होगी। तब हम यीशु के समान होंगे (1यूहन्ना 3:1-3)!

दूसरे आगमन के बाद. केवल यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर दैहिक पुर्नरुत्थान के समय, हमारी नाशमान देह भी बदल जाऐगी, वे मसीह की पुर्नरुत्थानित महिमावान देह के समान होगी द्धफिलिपियों 3:20-21ऋ। पृथ्वी में हमारी नाशमान मिट्टी द्धहमारी देह का तत्वऋ महिमा और सामर्थ में आत्मिक देह के लिए अनाशमान में पुर्नरुत्थनित होगी द्ध1कुरि. 15:42-44ऋ! तब क्या केवल हम मसीही लोग ही पूर्णरुप से और पक्के तौर पर चंगाई पाएंगे!

4. दुष्ट आत्मा के सताव से चंगाई।

पढ़ें: मत्ती 17:14-18; प्रेरितों के काम 10:38।

दुष्ट आत्माओं की बंधुवाई से चंगाई प्रार्थना के द्वारा होती है। प्रेरितों के काम 10:38 में हम पढ़ते हैं, ''यीशु भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छ करता फिरा।'' यह उत्तम है कि किताबों में बहुत से सिद्धान्त न विकसित किये जाएं मत्ती 17:21, ''परन्तु यह बिना उपवास और प्रार्थना के निकाली नहीं जा सकती'', क्योंकि सबसे अच्छी युनानी पुस्तक में और बाइबल के आरंभिक अनुवादों में यह वृतान्त नहीं मिलता। यह बाइबल की हस्तलिपियों में बाद में जोड़ा गया लगभग चौथी शताब्दी ई. सन् में जब लोग मठों में और सन्यास में संलग्न हो रहें थे।

5. भूमि की चंगाई।

पढ़ें 2 इतिहास 7:14।

भूमि की चंगाई तब होती है जब परमेश्वर सूखे और महामारियों को हटा दें और इसके बदले बारिश और अच्छी फसल दें। 2 इतिहास 7:14 में, परमेश्वर ने वादा किया, ''यदि मेरे लोग, जो मेरे नाम से जाने जाते हैं, आपने को दीन करें और प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी हों और अपने बुरे मार्गों से फिरें, तब मैं स्वर्ग से उनकी सुनूंगा और उनके पापों को क्षमा करुँगा और उनकी भूमि को चंगा कर दूंगा।''

ड. चंगाई के उपाय

1. परमेश्वर चंगाई के विभिन्न साधनों का उपयोग करता है।

सिखाएं।

(1) सहज चंगाई।

मनुष्य के पाप में गिरने के परिणामों के बावजूद, परमेश्वर ने शारीरिक विकारों को सुधारने हेतु मानव शरीर में एक अद्‌भुत शद्रि का निर्माण किया है । कई बीमारियां, संक्रमण और घाव अनायास ठीक हो जाते हैं, भले ही इसमें समय लगता हो। परमेश्वर अभी भी सहज चंगाई देने वाला हैं (इब्रानियों1:3)। सहज चंगाई इसलिए स्वर्गीय चंगाई है, वरन प्राक्रतिक चंगाई नहीं।

(2) डाक्टरों और दवाओं द्वारा उपचार के साधन।

कुछ विश्वासमय चंगाई देने वालों ने कभी-कभी कहा कि वे जिन लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं, वे ''उनकी चंगाई का दावा करें। वे कहते हैं, ''अब हमने आपके लिए प्रार्थना की है, आपको विश्वास होना चाहिए कि आपकी प्रार्थना का उत्तर दिया जा चुका है और आप अब पहले से ही चंगें हैं। और, ''आप अपनी बीमारी के किसी भी लक्षण की उपेक्षा कर सकते हैं जो आपके पास अभी भी हो सकता है। और, ''संकेत के रूप में अपने विश्वास में, दवाइयाँ लेना बंद करें'', या: ''अपनी बैसाखी दूर फेंक दें'', आदि। ये विश्वासी लोग परमेश्वर के वचन के अनुसार नहीं बोल रहें हैं, क्योंकि बाइबिल के अनुसार, दवा और प्रार्थना एक दूसरें का विरोध नहीं करती।

मरकुस 6:12-13 और लूका 10: 33-34 के अनुसार, यीशु मसीह के दिनों में तेल से बीमार लोगों का अभिषेक करना मूल चिकित्सा उपचार था। बाइबल में, दवाइयां, जैसा कि हम उन्हें जानते हैं, आज उनके शुरुआती चरण में थीं। शिष्यों ने तेल से बीमार लोगों का अभिषेक किया और उन्हें चंगा किया। अच्छे सामरी ने अपने मरीज के घावों पर पटी बाँधी और उसपर तेल और दाखरस उण्डेला। तेल का उपयोग खुले घाव (यशायाह 1:6) को शांत करने के लिए किया जाता था और दाखरस का इस्तेमाल घाव को सफ करनें के लिये किया (बाइबल 1 तीमुथियुस 5:23ऋ। फिर उसने उस आदमी को अपने गधों पर रख दिया और उसे एक सराय में ले गया जहाँ उसने उसकी देखभाल करी। यीशु ने सराय में अपने पड़ोसी को दी जाने वाली चिकित्सा वरन देखभाल के लिए उसकी प्रशंसा की।

पौलुस और कई अन्य लोगों ने लूका द्वारा प्रदान की गई चिकित्सा सेवाओं का आनंद लिया होगा, क्योंकि कुलुस्सियों 4:14 में, पौलुस उसे ''प्रिय चिकित्सक'' कहते हैं! हालाँकि पौलुस के पास चंगाई की सामर्थ थीं, फिर भी उन्होंने ट्रोफिमस को मिलिटस में बीमार छोड़ दिया था, मुमकिन है कि उसे पुनः पश्चाताप करने का मौका देने हेतु (2 तीमुथियुस 4:20)।

(3) चमत्कारी चंगाई।

1 कुरिन्थियों 12:28 कहता है कि परमेश्वर ने कुछ मसीहियों को ''उपचार के विविध आध्यात्मिक उपहार'' दिए हैं। ये हैं शरीर या लोगों की आत्मा का उत्थान करनें की क्षमता। परमेश्वर लोगों को दूसरों को उपचार करने हेतु अपनी रचना के रूप में उपयोग करता है। *बहुवचन* ''चंगाई के *उपहार*'' से पता चलता है कि परमेश्वर लोगों को ठीक करने के लिए विभिन्न प्रकार के साधनों का उपयोग करता है। परमेश्वर चिकित्सा डॉक्टरों और चिकित्सा से, पादरी और परामर्शदाता से, या मसीहियों के विश्वास की प्रार्थना के माधयम से चंगा करता है। इसलिए सभी प्रकार की चंगाई *दिव्य चंगाई* है। और सभी चंगाई अनिवार्य रूप से चमत्कारी हैं!

(4) अंतिम चंगाई।

1 कुरिन्थियों 15:50 कहता है कि ''मांस और रद्र (नश्वर मनुष्य) परमेश्वर के राज्य को प्राप्त नहीं कर सकता है''। पृथ्वी पर सभी उपचार अस्थायी चिकित्सा के रूप हैं। हमारी आत्मा का अंतिम और स्थायी उपचार तब होता है जब हम मर जाते हैं और यीशु मसीह की उपस्थिति में ले जाये जाते हैं (1 यूहन्ना 3: 1-3) । *हमारे शरीर की अंतिम और स्थायी चंगाई* केवल मसीह के दूसरे आगमन पर शरीर का पुनरुत्थान पर होती है (1कुरिन्थियों 15: 50-57; फिलिप्पियों 3: 20-21)। केवल नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में, मनुष्य को पूर्ण, अंतिम और स्थायी चंगाई मिलेगी। तब बीमारी, विकलांगता और मृत्यु हमेशा के लिए नष्ट हो जायेंगी (प्रकाशितवाक्य 21: 4)!

2. चंगाई के साधान के रूप में विशेष वरदान वाले लोग।

खोजें और चर्चा करें। परमेश्वर के उद्धार के इतिहास में चमत्कार कब होते हैं?

ध्यान दें। एक सामान्य नियम के रूप में, बाइबल परमेश्वर के अपवादी कार्यों (चमत्कारी) की अपेक्षा नियमित कार्यों(परमेश्वर हर क्षण सारी सृष्टि को सम्भाले रहता है) की ज्यादा चिन्ता करता है। बाइबल में परमेश्वर के उद्धार के इतिहास में परिस्थिति बदलने के लिए चमत्कार आरक्षित किये गये हैं। परमेश्वर के उद्धार के इतिहास के स्थिति पलटने वाली घटनाएं निम्नलिखित थे:

(1) पलायन (व्यवस्था)।

पढ़ें निर्गमन 15: 22-27; गिनती 21: 4-9)।

इस्राएल के छुटकारे और मिस्र से पलायन के समय, लोग मूसा को अपना अगुवा मानते थे।

(2) भविष्यद्वक्ता।

पढ़ें 1राजा 17: 17-24; 2राजा 5: 1-16।

महान नबियों की अवधि की शुरुआत के दौरान, इजराइल में एलि"याह और एलीशा के चारों ओर चमत्कार हुए।

(3) यीशु मसीह (सुसमाचार)।

पढ़ें मत्ती 4:23-24; प्रेरितों. 10:38।

यीशु मसीह के चारों ओर चमत्कार हुए, अर्थात, उस अवधि के दौरान जब परमेश्वर ने यीशु मसीह के माधयम से मनुष्य के स्वभाव को ग्रहण किया और उसके इतिहास मे प्रवेश किया।

(4) प्रेरित (प्रेरितों के पत्र)।

पढ़ें मरकुस 16:20; 2कुरिन्थियों 12:12; प्रेरितों के काम 14:3; इब्रानियों 2:3-4।

और अंतत: यीशु मसीह के चेलों के चारों ओर चमत्कार यीशु मसही के साथ जुड़ कर चेलों के द्वारा संपन्न हुए, यह मसीही कलीसिया की स्थापना का समय था (1 कुरिन्थियों 12: 9)। 2 कुरिन्थियों 12:12 के अनुसार, यीशु मसीह के चेलों के आस पास होने वाले चमत्कार प्रेरितों की अनूठी सेवा को प्रमाणित करने के लिए परमेश्वर की ओर से चिन्ह के रुप में थे।

यह बाइबल के समान्य तरीके के साथ सहमत होता है जैसा कि ऊपर कहा गया है। मरकुस 16:12 और प्रेरितों के काम 14:3 में हम पढ़ते हैं कि अपने चेलों को चमत्कार करने की सामर्थ दे कर परमेश्वर बाइबल के संदेश को पक्का करता है जो उसके साथ जुड़ा है। इब्रानियों 2:3-4 के अनुसार, परमेश्वर के द्वारा पवित्र आत्मा के वरदानों को अपनी इच्छा के अनुसार बाटनें का कारण यह था, कि वह आरंभिक कलीसिया में यीशु मसीह के चेलों के द्वारा (जैसा नये नियम में वर्णन किया गया है) उद्धार के संदेश के प्रचार को पक्का करना चाहता था।

(5) वर्तमान में मसीही इतिहास में बदलाव के बिन्दु।

पढ़ें 1कुरि. 12:28; 14:12। चमत्कार आज भी होते हैं! वे सभी जगहों पर होते हैं, परन्तु विशेषकर कुछ विशिष्ट देशों और स्थानों में मसीही कलीसिया के इतिहास के बदलाव के समयों पर हुए है। आत्मिक वरदान और चंगाईयाँ *मसीही कलीसिया को बनाने के उद्देश्य से होते हैं।*

वे मसीही लोग, जो यह दावा करते हैं कि उनके पास चंगाई के आत्मिक वरदान है या यह विश्वास है कि केवल परमेश्वर के वचन की सीमाओं और कलीसिया के अगुवों के निर्देशों में रह कर वे आज अपने आत्मिक वरदानों को प्रयोग करेंगे। तौभी, यदि चंगाई के वरदान के साथ व्यक्ति मौजूद हो या न हो बीमार लोगों की सेवकाई तो जारी ही रहेगी। याकूब 5:14 सिखाता है कि कलीसिया के प्राचीनों के द्वारा बीमार लोगों की सेवकाई सभी कलीसियाओं में हमेशा उपलब्ध रहनी चाहिए, चाहे उनके पास कोई आत्मिक वरदान हो या न हो!

3. चंगाई के साधान के रुप में प्रार्थना और अभिषेक।

पढ़ें याकूब 5:13-16। ***सिखाएं।***

(1) चंगाई की सेवकाई समान्य रुप से प्राचिनों से संबन्धा रखती है।

याकूब 5:14-15 सिखाता है, ''यदि तुम लोगों में कोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मल कर उसके लिए प्रार्थना करें। और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा; यदि उसन पाप भी किए हों, तो परमेश्वर उसको क्षमा करेगा।''

याकूब हमें यह नहीं सिखाता कि तेल और अभिषेक से चिकित्सक को बदल देना चाहिए। वह चिकित्सकों और आधुनिक दवाइयों को गलत नहीं बताता। मसीही लोगों को यह नहीं मान लेना चाहिए कि जिसका याकूब जिक्र नही कर रहा है उसका विरोध कर रहा! चंगाई में सदैव आत्मिक आयाम मौजूद रहता है और याकूब इस पद्यांश में इस पर बल देता है। किसी भी समय पर एक मसीही व्यक्ति को परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित हुए बिना चिकित्सक (दंत चिकित्सक, विशेषज्ञ, व्ययाम आदि) के पास नहीं जाना चाहिए। परन्तु कुछ समय होते हैं जब पहले परमेश्वर या केवल परमेश्वर के ही पास जाना उचित होता है।

याकूब चंगाई की प्रार्थना और अभिषेक की सेवकाई को कलीसिया के प्रचीनों के साथ जोड़ता है। चंगाई की सेवकाई किसी विशिष्ट व्यक्ति से संबन्ध नहीं रखती- जैसे कि कुछ लोग यह दावा करते है कि उनके पास ''चंगाई के वरदान'' है जैसा कि 1कुरि. 12:30 में वर्णन किया गया है। न ही यह कि अदभुत और बीत गये आदेश से संबन्ध रखती है जो अब उपस्थित नही है, जैसे कि मसीह के प्रेरित। चंगाई कि सेवकाई सामान्य रूप से कलीसिया के प्रचिनों के साथ सामूहिक रुप में सम्बन्ध रखती है!

(2) तेल से अभिषेक कोई संस्कार नहीं है।

याकूब 5:13-16 पर आधारित गलत शिक्षा और अभ्यास मसीही कलीसिया में रिवाज के तौर पर 1517 में सुधाार से पहले विकसित हुआ था।

- तीसरी शताब्दी ई. सन् में यह रिवाज था कि इलाके के *बिशप* उस तेल को अभिषेक करते थे जो बीमार के अभिषेक के लिए प्रयोग किया जाता था।
- दसवी शताब्दी ई. सन् में, यह केवल *याजक* होता था जो अभिषेक के तेल का प्रयोग करता था।
- बारवी शताब्दी ई. सन् में, शब्द सिद्धान्त ''तेल मलन संस्कार'' या ''मृत्यु संस्कार'' को स्थापित किया गया और उन लोगों का अभिषेक प्रतिबंधित कर दिया गया तत्काल मृत्यु निश्चित हो।
- तेरहवी शताब्दी में, तेल अभिषेक को ''सात संस्कारों'' में से एक घोषित कर दिया गया।
- 1545 में ट्रेंट की काउंसिल में एक अभिषाप *अनाथेमा* (कलीसियाई अभिश्राप जो व्यक्ति को कलीसिया से निष्कासित कर दें) की घोषणा की गई कि जो भी कोई इस बात से इंकार करेगा कि ''पवित्र तेल मलन संस्कार'' ''सही रूप में एक संस्कार है जो मसीह के द्वारा स्थापित किया गया... और अभिषिक्त प्रेरित याकूब के द्वारा प्रख्यात किया गया'' या जो यह इंकार करें कि यह अनुग्रह और पाप हटाता (पापों की क्षमा प्रदान करता) है.... या यह सोचता है कि याकूब जिन प्राचीनों की बात कर रहा है ''*वे बिशप द्वारा अभिषिक्त याजन नहीं हैं*'' पर लागू होगा।

यह बात स्पष्ट है कि यह अबाइबलीय परंपरा और याजकीय अंधविश्वास है। इसका याकूब 5:14-15 से कोई सम्बन्ध नही है। याकूब यीशु मसीह का प्रेरित नहीं था, परन्तु यीशु का भाई था। वह पहले बीमारी की चंगाई में रूचिकर था, जिसमें पापों की क्षमा बहुत छोटी भूमिका को निभाती थी। तेल से अभिषेक पाप की क्षमा नही ला सकती थी! यह पद्यांश यह नहीं सिखाता कि याजक मृत शय्या पर पड़े व्यक्ति को तैयार कर रहे हैं, परन्तु प्राचीन के बारें में बताता है जो बीमार व्यक्ति को पुनः स्थापित ठीक होने में सहायता कर रहे हैं!

(3) प्राचीनों की चंगाई सेवकाई से संबन्धित गतिविधियां।

- **घर में।**

याकूब किसी चंगाई सभा के बारे में बात नही कर रहा है, परन्तु बीमार व्यक्ति के घर पर व्यक्तिगत सेवकाई की बात कर रहा है। प्राचीनों के पास दो विशिष्ट कार्य है: बीमार व्यक्ति पर प्रार्थना करना और व्यक्ति को तेल से प्रभु के नाम में अभिषेक करना।

- **प्रार्थना।**

यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि इस पद्यांश में बीमार व्यक्ति को प्रार्थना करने के लिए या चंगाई हेतु अपने विश्वास का अभ्यास करने के लिए बुलाया नही गया। यह तो प्राचीन है जिन्हें प्रार्थना करने और चंगाई के लिए आवश्यक विश्वास के अभ्यास के लिए बुलाया गया है। इस सेवकाई का सम्पूर्ण महत्व विश्वास की प्रार्थना में है, न कि तेल के अभिषेक में। प्रभु ने अपनी चंगाई का वायदा और स्वास्थ प्रदान करने की सामर्थ को प्राचीनों की प्रार्थना के प्रतिउत्तर के रूप में रखा है।

- **थूकना।**

यीशु ने अपनी सेवकाई में अपनी लार का प्रयोग केवल बहरे और अंधो व्यक्ति के लिए किया (मरकुस 7:31-37; 8:22-26; यूहन्ना 9:6-7)। क्योंकि अंधो और बहरे व्यक्ति के साथ सामान्य बातचीत कठिन थी, उसने बीमार व्यक्ति को छूकर यह पक्का करने का प्रयास किया कि वह उन्हें चंगा करना चाहता है।

- **तेल से अभिषेक।**

मरकुस 6:13 में, यीशु मसीह सही में *तेल से अभिषेक* करने की आज्ञा नहीं है, परन्तु पक्के तौर पर उसने उसे स्वीकृत किया है। यीशु मसीह के दिनों में तेल से अभिषेक एक सामान्य चिकित्सीय पदत्ती थी। तेल से अभिषेक को दवा के तौर पर प्रयोग किया जाता था। जैसा कि प्राचीन तेल का प्रयोग छू सकने और प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति और चंगाई उतरने के अधिकार (सामर्थ) के प्रतिक चिन्ह और यीशु मसीह के नाम के महत्व के रूप में करते थे।

- **हाथों का रखना।**

इस बात का ध्यान देना चाहिए कि प्राचीनों के द्वारा *हाथ का रखा जाने* का कोई भी विवरण नहीं है। हाथों

कैननस एण्ड डिक्रीज़ ऑफ काऊंसिल ऑफ ट्रेंट, जे. वॉटरवर्थ द्वारा अनुवादित, 1848, पेज 110 से आगे।

का रखा जाना एक और *प्रत्यक्ष और छू सकने वाली अभिव्यक्ति* और यीशु मसीह के नाम में चंगाई की सामर्थ के उतरने का प्रतीक चिन्ह है (मरकुस 6:5; प्रेरितों के काम 28:8)। सही में आज इसकी अनुमति है।

- **पाप स्वीकारण।**

यह भी सोचने की जरुरत नहीं है कि बीमार व्यक्ति को पहले लोगों के सामने प्राचीनों की उपस्थिति में *अपने पापों को मानना चाहिए* (ऊपर देखें)। प्रचीनों के लिए यह पूछना एकदम सही होगा कि कहीं कोई पाप तो नहीं था जिसको स्वीकार करने और क्षमा कराने की आवश्यकता हो। अपनी प्रार्थना के समय में पापों को मानना और क्षमा प्राप्त करना ज्यादा सही होगा।

4. विश्वास की प्रार्थना और उसका परिणाम।

(1) वायदों का उद्देश्य विश्वास को मिट देना या उसका दिखावा करना नहीं है।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल में प्रार्थना के संबन्ध में वायदों का उद्देश्य क्या है? बाइबल के पद्यांशों को पढ़ें।

- **याकूब 5:15। विश्वास कोई अनुचित मान लेना नहीं है कि परमेश्वर अवश्य ही चंगाई दें या देंगे।**

याकूब 5:15 यह वायदा करता है कि विश्वास की प्रार्थना बीमार व्यक्ति को स्वस्थ करने के लिए बचाती, छुड़ाती या आरोग्य करती है और परमेश्वर उसको उठा कर खड़ा कर देंगे। यदि कथन ''विश्वास की प्रार्थना'' को ही ले लिया जाए, तब विश्वास यह मान लेना है कि सभी परिस्थितियों में चंगाई प्रदान करना परमेश्वर की इच्छा है। यह वह नहीं है जो याकूब करना चाहता है।

- **मरकुस 11:24। विश्वास को प्रकाशन की जरुरत होती है।**

यीशु ने इस प्रकार के समाना वायदे किये। मरकुस 11:24 में वह कहते है, ''जो कुछ तुम प्रार्थना करके माँगो तो विश्वास कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिये हो जाएगा'' (यूहन्ना 14:13; मत्ती 18:19)। यह कथन ''विश्वास की प्रार्थना'' वास्तविकता में महत्वपूर्ण बात है, परन्तु यह जटिल और खतरनाक भी है। जब तक परमेश्वर मसीही लोगों को बहुत ही स्पष्ट प्रकाशन नहीं दें देते कि इस बीमार व्यक्ति को चंगा करना उसकी इच्छा है, मसीही लोग बहुत बार अपनी ही धारणाओं कि, क्या परमेश्वर करेंगे या नहीं करेंगे के द्वारा भ्रमित हो जाते हैं। इस प्रकार के प्रकाशन के बिना, इस धारणा के साथ बीमार व्यक्ति की चंगाई के लिए प्रार्थना करना कि परमेश्वर अवश्य ही चंगा करेगा, एक अनुपयुक्त सोच है और केवल बीमार व्यक्ति की कोमल आत्मा को नुकसान पहुंचाती है(भजन संहिता 56:8)।

- **मरकुस 9:21-24। विश्वास हमेशा ही बहुत पक्का नहीं होता।**

बाइबल यह नहीं कहती कि हमें केवल तब ही प्रार्थना करनी चाहिए जब हमें विश्वास की पक्कायत हो कि जो हम मांग रहे हैं हमें मिल जाएगा। मरकुस 9:21-24 में, यीशु ने पक्कायत से अलग उसके अपने

स्वीकारण के द्वारा विश्वास की सामर्थ के लिए प्रतिउत्तर दिया है। उस व्यक्ति ने कहा, ''मैं विश्वास करता हूं; मेरे अविश्वास का उपाय कर!''

- **इफिसियों 3:20। विश्वास प्रार्थनाओं के लिए परमेश्वर के उत्तर का पैमाना नहीं है।**

बाइबल यह नही कहती कि हमारी प्रार्थनाओं के लिए परमेश्वर का प्रतिउत्तर वही तक मिलेगा जहां तक हमारा विश्वास जाएगा। इफिसियों 3:20 में, पौलुस कहता है कि परमेश्वर हमारी विनती या समझ से कही अधिक करने के योग्य है!

- **कुरिन्थियों 12:9अ, 11। विश्वास एक दिव्य वरदान है न कि मनुष्यों के द्वारा खोखलापन या दिखावा।**

पक्के तौर पर बाइबल यह नही कहती कि हमें अपने विश्वास को फूलाना या यह दिखावा करना है कि हमारे विश्वास ऐसा है जबकि वह वैसा नहीं है। परमेश्वर दिखावा करने वालो को नहीं, परन्तु धर्मी को खोजता है। परमेश्वर ऐसे लोगों को खोजता है जो आत्मा और सच्चाई में आराधना करें (यूहन्ना 4:23-24)। यीशु, पौलुस और याकूब यह सिखते हुए प्रतित होते हैं कि हमें अपनी प्रार्थनाओं में हमेशा इस तथ्य को मानना है कि परमेश्वर हमें हमारी मांग के अनुसार वही विशिष्ट विश्वास का वरदान देना चाहेंगे। इस प्रकार का विश्वास हमेशा ही परमेश्वर की ओर से प्रभुता का वरदान है (1कुरि. 12:9अ,11)।

- **मत्ती 6:8। विश्वास सत्य से परिपूर्ण और धीरजमय प्रतिक्षा है यह देखने की कि सामर्थी परमेश्वर क्या करने की योजना बना रहे हैं।**

''विश्वास की प्रार्थना'' के विषय में बाइबल के यह पद्यांश (मत्ती 18:19; मरकुस 11:22-24; यूहन्ना 14:13; याकूब 5:14) प्रार्थना के विषय में पूर्ण सत्य नहीं हैं। मसीही प्रार्थनाओं की अधिकतर संख्या विश्वासपूर्ण टिकने की प्रार्थनाएं हैं; और ऐसा ही है, क्योंकि बहुत बार हम नहीं जानते क्या मांगना है अपने लिए या दूसरों के लिए। हमारे अंदर हमेशा क्या सही है या क्या मांगना चाहिए इस जानकारी की कमी होती है और इसलिए हम प्रार्थना करते हैं, ''प्रभु, कृप्या इस व्यक्ति या परिस्थिति को आशीषित करें''। हम परमेश्वर से ''आशीष देने के लिए'' कहते हैं, हम लगातार यह स्वीकार करते रहते हैं कि हम नहीं जानते हमें विशिष्ट रुप से क्या मांगना है, परन्तु परमेश्वर जानता है किस चीज की आवश्यकता है। इससे पहले हम प्रार्थना करें, परमेश्वर पहले से ही जानता है हमें सही में किस चीज की आवश्यकता है (मत्ती 6:7-10)। इसलिए प्रार्थना परमेश्वर की संप्रभुता के लिए प्रतिबद्धता और समर्पण है। सभी सच्ची प्रार्थना धीरज के साथ सच्चे विश्वास में इस बात की प्रतिक्षा करना है कि परमेश्वर क्या करना चाहते है।

(2) वायदों का उद्देश्य मसीही लोगों को उत्साह और आत्मविश्वास के साथ प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित करना है।

पढ़ें मरकुस 1:17; 2:20-22; 3:33-35; 5:39; 7:27; 8:15; 9:12-13; 9:43,45; 10:38-39; मरकुस 11:22-24।

खोजें और चर्चा करें। अलंकारिक भाषा के प्रकाश में, जो यीशु ने प्रयोग की, हम किस प्रकार मरकुस 11:22-24 को समझेंगे?

- **<u>विश्वास में प्रार्थना।</u>**

विश्वास आत्मा की खिड़की है जिसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम अन्दर उण्डेला जाता है। *विश्वास* एक खुला हाथ है जिससे मनुष्य परमेश्वर तक जो सब कुछ का देने वाला है, पहुंचाता है। *विश्वास* वह जोड़ होता है जिससे मनुष्य की ट्रेन परमेश्वर के इंजन से जुड़ती है। *विश्वास* मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन होता है जो परमेश्वर लटकता या पकड़ता है परमेश्वर की पहल को। *विश्वास* उद्धार के वृक्ष का तना है, जिसकी जड़े अनुग्रह होती है, और जिसका फल अच्छे कार्य होते हैं (रोमियों 5:1,5; यूहन्ना 1:12-13; 2थिस्सलुनीकियों 2:13-14; इफिसियों 2:8-10)।

विश्वास अब्राहम की धार्मिकता का माधयम भी था (उत्पत्ति 15:6)। *विश्वास* वह चुम्बक था जो मूसा को मिस्र के आनन्द से दूर ले गया, जिससे उसने मिस्र के आनन्द से बढ़कर परमेश्वर के लोगों के साथ दु:ख भोगना और भी उत्तम लगा (इब्रानियों 11:24-27)। *विश्वास* वह ताकत है जिसने यरीहो की दीवार को भी ढाह दिया (यहोशू 6:20)। *विश्वास* वह भेद था जिसने रूत को अपने विश्वास को व्यक्त करने के योग्य बनाया (रुत 1:6)। *विश्वास* वह हथियार था जिसने गोलियत को मारा और सन्हेरीब की सेना का नाश किया (1शमूएल 17:45-47 और 2राजा 19:14-37)। एलिय्याह और झूठे भविष्द्धक्ताओं के मध्य में कर्मेल पर्वत पर *विश्वास* तय करने वाला तत्व था (1राजा 18:30-40)। *विश्वास* परीक्षा की घड़ी में अय्यूब की ढाल था (अय्यूब 19:23-24)। *विश्वास* वह मांसपेशी था जिसने गुफा में दानिय्येल के सामने शेरों का मुंह बंद कर दिया था (दानिय्येल 6:19-23)। *विश्वास* वह दवा था जिसने सरदार के सेवक और नये नियम में बहुत से लोगों को चंगा किया(मत्ती 8:10,13)।

विश्वास परमेश्वर की ओर झुकना, उस पर निर्भर करना और सभी प्रकार की परिस्थितियों में उसको थामे रहना है। *विश्वास* जानता है कि परमेश्वर की बलवन्त भुजा आपके सहारे के लिए है (व्यवस्थाविवरण 33:27)। किसी व्यक्ति द्वारा अपने मार्गों को परमेश्वर को समर्पित करना, उस पर भरोसा रखना यह जानते हुए कि वह हमारे लिए उत्तम ही करेगा, *विश्वास* है (भजन संहिता 37:5)। *विश्वास* एक छोटे बच्चे के समान परमेश्वर के राज्य को स्वीकार करना है (मरकुस 10:15)। *विश्वास* जिसकी हम आशा करते हैं उसका निश्चय, और अनदेखे का प्रमाण है (इब्रानियों 11:1)। *विश्वास* वह विजय है जिससे संसार पर जय पायी जाती है (1यूहन्ना 5:4)।

- **<u>प्रार्थना पर्वतों को हिला देती है - एक अलंकारिक भाव।</u>**

जैतून पर्वत को सही में उठाना और समुन्द्र में फेंकने का अर्थ होगा कि लगभग 1200 मीटर को एक साथ उठा कर समुन्द्र में गोते लगवाना! यहां पर, विश्वास द्वारा ऐसे कोई दृश्य का प्रयास नहीं है कि इस पर्वत को समुन्द्र में डाला जाए। यीशु तो अलंकारिक भाषा का प्रयोग कर रहे हैं जैसा की वह अक्सर करते थे।
इसी प्रकार की अलंकारिक भाषा यशायाह 40:4 में भी मिलती है, ''हर एक तराई भर दी जाए और हर एक पहाड़ और पहाड़ी गिर दी जाए; जो टेढ़ा है वह सीधा और जो ऊँचा-नीचा है वह चौरस किया जाए।'' यहां पर *तराई* निराशा और दुख: की उन गहराइयों को व्यक्त करती है जो परमेश्वर के लोगों को बंधुवाई में था और *पहाड़-पहाड़ी* आस-पास के राज्यों के गर्व और स्वयंउत्थान को व्यक्त करते हैं। परमेश्वर कहता है कुछ भी उसके आगमन को उसके लोगों के पास आने से छुपा नहीं सकेगा!

यह जकर्याह 4:7 में भी मिलता है, ''हे बड़े पहाड़, तू क्या है? जरुब्बाबेल के सामने तू मैदान हो जाएगा; उस पर अनुग्रह हो अनुग्रह!'' यह कठिनाई के पहाड़ के लिए प्रयोग किया गया है जिसका जरुब्बाबेल को मंदिर के निर्माण में सामना करना है। कठिनाई के पहाड़ गायब हो जायेंगे!

मरकुस 11:24 के संदर्भ के प्रकाश में, यह नाटकिय अलंकार विश्वास और प्रार्थना के लिए प्रयोग होता है। परमेश्वर की सिद्ध इच्छा के साथ एकता में कोई भी काम करने में असंभव नहीं होता! वे लोग जो विश्वास करते हैं और संदेह नही करते इस प्रकार के पहाड़ो को सरका देंगे!

- **पर्वत जो प्रेरितों ने सरकाये।**

आत्मिक और भौतिक दोनों ही प्रकार के समयों में, प्रेरित उन कार्यों को कर रहे थें जो सही में *असंभव* माने जाते थे जैसा कि पर्वत को उठा लेना और समुंद्र मे फेंक देना। क्या *विश्वास* के द्वारा पतरस पानी पर नहीं चला (मत्ती 11:29)? क्या बारह प्रेरितों ने यीशु के नाम में दुष्ट आत्माएं नहीं निकाली (लूका 10:17)? कुछ दिन पहले ही यीशु ने अपने चेलो से कहा था, ''जो मुझ पर विश्वास करता है, ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा। वरन इससे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ'' (यूहन्ना 14:12)। प्रेरितों के काम की पुस्तक प्रमाणित करती है कि यीशु ने जो मरकुस 11:24 में कहा हैं सही है। प्रेरित पतरस ने लंगड़े को चंगा किया, बीमार को चंगा किया और दुष्ट आत्माओं को निकाला और मृत लड़की को जिला दिया (प्रेरितों के काम 3:6-9,16; 5:12-16; 9:32-43)। इसी के समान पौलुस प्रेरित ने भावी कहने वाली आत्मा को निकाला, रोगी को चंगा किया और मृत लड़के को जिल दिया (प्रेरितों के काम 16:16-18; 19:11-12; 20:9-12)। यह सभी चंगाई अल्पकालिक थी।

परन्तु परमेश्वर ने प्रेरितों को और भी स्थायी चंगाईयों के लिए प्रयोग किया: वे हजारों को आत्मिक अंधकार से आत्मिक ज्योति में ले आये (प्रेरितों के काम 2:41)। उन्होंने सुसमाचार को उस क्षेत्र से आगे तक प्रचार किया जिसमें यीशु ने अपनी सेवकाई की (प्रेरितों के काम 1:8)! और उन्होंने यीशु के साढ़े तीन साल की सेवकाई से कही अधिक समय तक सेवा की! यह कुछ महान बातें थीं!

- **सच्ची प्रार्थना की विशेषता।**

''जो कुछ भी तुम प्रार्थना में मागों'' एक तरीके से अविश्वसनीय है, परन्तु यह धयान में रखना चाहिए कि इस प्रकार की प्रार्थना या मांगना सच्ची प्रार्थना की समरूपता में जैसा यीशु ने सभी जगह पर प्रगट किया और यह बाइबल की सभी शिक्षाओं के अनुरुप होनी चाहिए। अत: प्रार्थना अवश्य ही विनम्रता, बालक के समान भरोसा, यह विश्वास की आपको मिल गया है की अभिव्यक्ति होनी चाहिए (मत्ती 7:11)। यह गंभीर मन और हृदय से की जानी चाहिए (मत्ती 6:5), प्राप्त करने की इच्छा के साथ (मत्ती 7:7), सभी बातों के लिए प्रेम के साथ (मत्ती 5:43-48), परमेश्वर की संप्रभुता की इच्छा के समपर्ण में (मत्ती 6:10ब) और मसीह के नाम में (यूहन्ना 16:24) की जानी चाहिए। यीशु के नाम में प्रार्थना करने का अर्थ है उसकी प्रगट की सभी बातों और उसके सभी गुणों पर भरोसा रखना है।

- **आत्मविश्वास के साथ प्रार्थना करना, न की हठी दबाव के साथ।**

जैसा की याकूब 5:15 में अस्वीकृत कथन कहा गया, ''विश्वास की प्रार्थना से रोगी बच जाएगा (यूनानी: सोजा)'', प्रार्थना के विषय में बहुत सी समान अपुष्टियों के लिए आता है। मत्ती 18:19 में यीशु ने वायदा किया, ''यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए जिसे वे माँगें, एक मन के हों, तो वह मेरे

पिता की ओर से जो स्वर्ग में है उनके लिये जो जाएगी।'' और यूहन्ना 14:13 में उसने वायदा किया, ''जो कुछ तुम मेरे नाम में मांगोगे वही मैं करुँगा।''

इस प्रकार के वायदे मसीही लोगों को आत्मविश्वास के साथ प्रार्थना में आने के उद्देश्य से किये गये। मसीही लोगो को प्रार्थना के लिए साहस और उत्साहवर्धन की आवश्यकता होती है विशेषकर चंगाई के लिए। यह वायदे उस परमेश्वर के बारे में बताते हैं जो हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है, जिसके लिए सब कुछ संभव है, और जो इतना भला है कि हम से कुछ भी उत्तम रख नहीं छोड़ता! परन्तु एक बात यह वायदे हमें हठी हृदय से यह दर्शाते हुए कि *हम जानते* हैं कि क्या सही है और हमारी इच्छा अवश्य ही पूरी होनी चाहिए इसके लिए उत्साहित करते या बढ़ावा नहीं देते!

(3) प्रार्थना में विश्वास का सत्व् भरोसे के साथ परमेश्वर की संप्रभुत्व इच्छा में टिके रहना है।

पढ़ें मत्ती 6:9-10; लूका 22:42; याकूब 4:15।

खोजें और चर्चा करें। प्रार्थना के संबन्ध में *विश्वास* का सत्व् क्या है?

- **प्रार्थना में विश्वास का सत्व् भरोसे के साथ परमेश्वर की संप्रभुत्व इच्छा पर निर्भर करना है।**

जब यीशु ने प्रभु की प्रार्थना में सिखाया कि सभी लोगों को हमेशा प्रार्थना करनी चाहिए, ''तेरा नाम पवित्र माना जाए; तेरा राज्य आए; तेरी इच्छा पूरी हो'', उन्होंने सिखाया कि तुम्हारी सभी प्रार्थनाओं में यह तत्व जरुरी होना चाहिए!

याकूब 4:15 कहता है,''इसके विपरीत तुम्हें यह कहना चाहिए, 'यदि प्रभु चाहे तो हम जीवित रहेंगे, और यह या वह काम करेंगे।'' यह सिखाता है कि जीवन और प्रार्थना का सत्व् ''मेरी इच्छा नहीं, परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो'' है (लूका 22:42)!

इसलिए विश्वास की प्रार्थना में हमारा विश्वास इस धारणा के साथ नहीं होना चाहिए कि परमेश्वर स्वत: ही बीमार व्यक्ति को चंगा करने वायदा पूरा करेगा। इससे बढ़कर ''विश्वास की प्रार्थना'' संप्रभुत्व, विश्वासयोग्य और प्रेमी परमेश्वर की इच्छा पर एक भरोसेमंद टिकाव होना चाहिए, केवल वही जानता है कि बीमार व्यक्ति के लिए क्या उत्तम है, चाहे वह चंगाई है या नहीं। न तो बीमार व्यक्ति और न ही प्राचीन यह जोर डालेंगे कि उस स्त्री या पुरुष की इच्छा पूरी होनी चाहिए। प्राचीन लोग इसलिए इकट्ठे होते है कि वे बीमार व्यक्ति को दयालु और न बदलने वाले परमेश्वर की इच्छा के अर्न्तगत सम्पूर्ण, आवश्यक सुरक्षा में सौंप दें। परमेश्वर की सिद्ध इच्छा संभत: बीमार व्यक्ति की सेहत को स्वास्थ्य कर देने की हो। यह एक कम लाभ की बात है! या परमेश्वर की सिद्ध इच्छा बीमार व्यक्ति को अपने पास स्वर्ग में ले लेने की हो जहां पर वह जीवन की संपूर्णता का आनन्द लेगा। यह एक सर्वोपरी लाभ है!

इस कारण से मसीही लोगों को अपनी सभी प्रार्थनाओं में अवश्य ही कहना चाहिए (न केवल चंगाई की प्रार्थनाओं में), ''तेरी (स; ऋ इच्छा पूरी हो! इस प्रकार के निवेदन का प्रभाव यह है कि आपकी प्रार्थनाओं की सभी सीमितता दूर हो जाएगी! बीमारी के लिए हमारा ज्ञान, हमारा प्रस्तावित हल और परमेश्वर की इच्छा की हमारी समझ हमेशा ही सीमित रही है (व्यवस्थाविवरण 29:29)! कभी-कभी हम अपने ज्ञान कि क्या होना चाहिए की वजह से अपनी प्रार्थनाओं पर हदों को लागू कर देते है। कभी-कभी वह अपने प्रस्तावों को लागू कर कि कैसे हमारी जरुरतें पूरी होंगी अपनी प्रार्थनाओं पर हद बैठा देते हैं। ''तेरी इच्छा पूरी हो जाए'' प्रार्थना करना हमारी प्रार्थनाओं पर कोई सीमा नहीं लगाता। इससे बढ़कर यह हमारी प्रार्थनाओं को पृथ्वी की सभी सीमाओं से ऊपर उठाता है! यह हमें योग्य न होते हुए भी परमेश्वर के हाथों में और उसकी अनन्त

बुद्धि, प्रेम और सामर्थ में सौंप देता है। किसी बीमार को परमेश्वर के हाथों में सौंप देने से बढ़कर कोई सुरक्षित स्थान नहीं है। और सबसे उपयुक्त, लाभकारी, और महिमावान हल जो परमेश्वर के पास उससे बढ़कर कोई हल नहीं है!

''और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं''(रोमियों 8:28)।

च. चंगाई का वातावरण

परिचय दें। जब मसीही लोग बीमार व्यक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं, तो उन्हें प्रेम और विश्वास के वातावरण में प्रार्थना करनी चाहिए। हमारी जिम्मदारी विश्वास और प्रेम का अभ्यास करना है। परमेश्वर की जिम्मेदारी अपनी इच्छा को अपने प्रभुत्व तरीके से पूरा करना है।

1. विश्वास और चंगाई।

(1) विश्वास अपने आप में या उस व्यक्ति में जो चंगाई के लिए प्रार्थना करता है विश्वास नहीं होता।

वह बीमार व्यक्ति, जिसमें अपने आप में या उन लोगो में जो चंगाई के लिए प्रार्थना करते है विश्वास होता है, वह दुखी होने के लिए बाध्य होता है। जब लोग अर्न्तमुखी होते है और अपने स्वयं के सन्देहों से बड़े प्रयासों से संघर्ष करते हैं या अपने विश्वास में विश्वास को भरने की कोशिश करते हैं (यह कि, यह मानने का प्रयाय करना कि उनके पास बड़ा विश्वास है जब्कि ऐसा होता नहीं), वे भूल जाते हैं कि उस प्रकार का विश्वास परमेश्वर की ओर से दान होता है (1कुरि. 12:9अ)।

जब उनकी प्रार्थना से बिमार व्यक्ति में कोई चंगाई या बदलाव नहीं होता तो वे बीमार व्यक्ति को जोर से दबाते हुए और तेजी से शोर मचाते हुए ढ़ेर सारे प्रचार के साथ उसके विश्वास को मजबूत करने के लिए प्रार्थना करने का दिखावा करने लगते हैं। परन्तु ऐसा करने के द्वारा, वे बीमार व्यक्ति के विश्वास को नही बढ़ाते, बल्कि चिन्ता को और बढ़ा देते हैं। जो भी हो, मसीही लोगों को बीमार व्यक्ति को कभी भी नहीं कहना चाहिए कि वह दवाई लेना छोड़ दें और अपनी बीमारी के आगे आने वाले लक्षणों को नजरअंदाज कर दें। विश्वास कभी भी लोग में या जो वह कहते हैं उसमें केन्द्रित नही होता।

(2) विश्वास हमेशा परमेश्वर में उसकी विश्वासयोग्यता, बुद्धि, सामर्थ और प्रेम में होना चाहिए।

परमेश्वर विश्वासयोग्य है। परमेश्वर हमेशा अपने बच्चों की प्रार्थना को सुनता है और हमेशा उनका उत्तर देता है चाहे विश्वासी को वह उत्तर नजर भी न आये (इफिसियों 3:20)!

परमेश्वर बुद्धिमान है, क्योंकि मेरे जीवन के लिए उसकी संप्रभुता की योजना एकदम सर्वोतम है और वह मेरी अज्ञानता और सीमित उद्देश्यों को जानता है (रोमियों 8:28)।

परमेश्वर सर्वसामर्थी है और जो कुछ भी मैं उससे मांगता हूँ उसके लिए मुष्किल नहीं है (यिर्मयाह 32:17)। ''परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नही है'' (लूका 1:37)!

परमेश्वर प्रेमी और भला है, और वह मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर इस प्रकार देता है कि मुझे ज्यादा लाभ प्राप्त हो। विश्वास इस पूर्ण भरोसे के साथ परमेश्वर की ओर मुड़ना है कि वह जानता है मेरे लिए क्या सही है, कि वह मुझे सबसे अधिक प्रेम करता है और उसके जिसकी मुझे आवश्यकता है वह सब कुछ करने की

सामर्थ है। इसलिए मसीही लोग अपने विश्वास को सही में बीमार व्यक्ति के लिए प्रार्थना करके व्यक्त करते हैं! मसीही लोगों की बीमार व्यक्तियों के लिए प्रार्थना करना जिम्मेदारी है परन्तु उन्हें बाकी चीजों को परमेश्वर के हाथ में छोड़ देना चाहिए।

(3) विश्वास बढ़ सकता है।

जब चेले मिर्गी से पीड़ित लड़के को चंगा करने में असफल हो गये, यीशु ने उन से कहा कि वे विश्वास की कमी की वजह से उसे चंगा नहीं कर सके। मत्ती 17:20 में, यीशु लगातार सिखाते हैं, ''मैं तुम से सच कहता हूँ, यदि तुम्हारा विश्वास राई के दान के बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कह सकोगे, यहाँ से सरक कर वहाँ चला जा, तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिए अनहोनी न होगी।'' राई का दाना बहुत ही छोटा दाना होता है। अच्छी भूमी मिलने पर यह बढ़ता है जब तक पेड़ नही बन जाता इतना बड़ा कि चिड़ियाँ उसकी शाखाओं में बसेरा बनाती हैं।

यीशु यह सिखाते है कि विश्वास राई के दाने के बराबर होता है। भले ही आरंभ में तुम्हारा विश्वास छोटा हो, मसीह के संपर्क में आने के बाद, यह बड़ता जाता है इतना कि यह महान काम कर सकें। राई के दाने के बराबर विश्वास परमेश्वर पर इस प्रकार का विश्वास होता है जो एकदम से अपनी स्फल न होने पर सरलता से निराशा में साहस नहीं छोड़ता। यह परमेश्वर के साथ अपने बिना रूके और जीवनदायक संबन्ध को बनाये रखता है। यह लगातार प्रार्थना में होता है कि परमेश्वर अपने निश्चित समय और अपने निश्चित तरीके से प्रार्थना का उत्तर देंगे। परमेश्वर पर इस प्रकार का विश्वास उस व्यक्ति को जो प्रार्थना करता है परमेश्वर के अनन्त और समाप्त न होने वाली सामर्थ, बुद्धि और प्रेम से जोड़ता है।

(4) विश्वास परमेश्वर के प्रकाशन के वचन के साथ एकता में कार्य करता है।

नूह और अब्राहम परमेश्वर की इच्छा के प्रगट होने के बाद अपने विश्वास का प्रयोग करने के योग्य हो सके (इब्रानियों 11:6-8)। यदि परमेश्वर ने अपनी इच्छा को उन पर प्रगट नही किया होता तो उन्हें अपने विश्वास को किस प्रकार प्रयोग करना है नही मालूम होता। जब परमेश्वर ने अपने वचन और इच्छा को बाइबल में प्रगट कर दिया, आप अपने विश्वास को परमेश्वर और जो वह कहता है उसमें प्रयोग करने के योग्य हुए। तब आपका विश्वास भी पहाड़ों को सरकाने के योग्य होगा। पहाड़ सरकाने को एकदम वैसे ही नही ले लेना है, परन्तु अलंकारिक रूप से, क्योंकि जर्कयाह 4:7 में यह कठिनाईयों का पहाड़ है जिसका वह सामना कर रहा है जो गायब हो जाएगा। यीशु के कहने का अर्थ है कि परमेश्वर की ओर से आपको दिया गया कोई भी काम करने में अंसभव नही होगा जब आप परमेश्वर के साथ भरोसे के संबन्ध मे बने रहें (भ.सं. 18:29; मत्ती19:26; फिलिप्पियों 4:13)। इसलिए, विश्वास के साथ, जो परमेश्वर के दिये गये काम पर आधारित हो और जो बिना छोड़े बढ़ता ही जाए, आप के लिए कुछ भी असंभव नहीं है!

2. प्रेम और चंगाई।

1कुरि. 13:2 कहता है, ''और मुझे यहां तक विश्वास हो, कि मैं पहाड़ों को हटा दूँ, परन्तु प्रेम न रखूँ तो मैं कुछ भी नहीं।'' गलातियों 5:6 कहता है, ''केवल विश्वास का जो प्रेम के द्वारा प्रभाव करता है''। जब मसीही लोग बीमार व्यक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं, तो उन्हें प्रेम के वातावरण में प्रार्थना करनी चाहिए। बीमार व्यक्ति को चंगाई कि सेवकाई कि द्वारा दु:ख नहीं पहुँचना चाहिए।

(1) कुछ मसीही लोग चंगाई में परमेश्वर की सामर्थ पर बल देते है।

वे चंगाई और चमत्कार करने के लिए परमेश्वर के वायदों पर ध्यान लगाते हैं। वे विश्वास को खीचते है। एक बीमार व्यक्ति को इन वायदों को पाने के लिए अवश्य ही विश्वास करना चाहिए। वे कहते हैं कि

परमेश्वर उनको चंगाई दे कर उनके विश्वास का सम्मान करेगा। वे लोग जो परमेश्वर की सामर्थ को चंगाई में देखते हैं, अधिकारिक रूप में तेज आवाज और हाथ को जोर से रख कर प्रार्थना करने का दिखावा करते हैं। जो भी हो, उनका जोर का बोलना उसकी आन्तरिक असुरक्षा का चिन्ह है और बलपूर्वक हाथ का रखना उनके अपने भय को ढकता है।

इस प्रकार का काम बीमार व्यक्ति को शायद नुकसान पहुंचाए जब परमेश्वर अपनी अनन्त बुद्धि में उस बीमार व्यक्ति को चंगा न करें। जो व्यक्ति प्रार्थना कर रहा हो कह सकता है कि वह व्यक्ति इसलिए चंगा नहीं हुआ क्योंकि उसे विश्वास नहीं था या उसका विश्वास मजबूत नहीं था। बीमार व्यक्ति शायद सोचे कि उसके चंगे न होने का वह स्वयं ही कारण है और बुरी तरह से हितोत्साहित, असफल, तिरस्कृत, त्यागा हुआ महसूस करें। या वह परमेश्वर में दोष लगाए कि परमेश्वर के पास चंगाई की सामर्थ नहीं है या उसे उसकी प्रार्थनाओं की परवाह नही है। वह परमेश्वर के विपरीत मुड़ जाए।

(2) कुछ मसीही लोग चंगाई में परमेश्वर के प्रेम पर जोर देते हैं।

वे परमेश्वर की बुद्धि और प्रेम के अनुसार उसके वायदों पर ध्यान देते हैं। वे प्रेम पर जोर देते हैं। बीमार व्यक्ति को उन सभी बातों को विशेषकर अपनी घृणा, क्रोध, कड़वाहट और लोगों के साथ बुरे संबन्धों को जो प्रेम का विरोध करती हैं *निकाल देना चाहिए*। उन्हें परिणामों को पूर्ण रुप से परमेश्वर पर छोड़ देना चाहिए। वे यह स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर की प्रभुता रहस्यमय है और सभी चंगे नहीं होते। वे लोग जो परमेश्वर के प्रेम को चंगाई में बल देते हैं, उन्हें अधिकारिक आकृति बनाने की आवश्यकता नहीं है, वह सभी करें जो प्रेम को व्यक्त करने के लिए किया जा सकता है। प्रेम धीरजवन्त है और कृपालु है। प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता और अपनी भलाई नहीं चाहता। प्रेम क्षमा करता है और सत्य से आनन्दित होता है। यह व्यवहार बीमार व्यक्ति को नुकसान नहीं पहुँचा सकता, क्योंकि बीमार व्यक्ति और उस पर प्रार्थना करने वालो भाई व बहन एक बार फिर अपने को परमेश्वर के प्रभुत्व और उत्तम इच्छा को समर्पित करते है।

''मेरी नहीं, परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो!''

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रिया]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।
या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें)।

1. **समर्पण:** चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।

2. "मसीही परिवार में बच्चों को प्रशिक्षण देना" पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को-**प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।** इस बात का ध्यान दें कि आप बच्चे का पालन पोषण करते समय आप बाइबल के सिद्धान्तों को उसके जीवन के आधार के रूप में इस्तेमाल करें।

3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रकाशितवाक्य 4-7 में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4. याद करें। नयी पांच आयतों को याद करें व दोहराएं। **(17) यूहन्ना 16:13।**
रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।

5. बाइबल अध्ययन। यूहन्ना 20 के आधार पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें।

6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का **अद्यपन करें।** जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।